तुलसीदास

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» तुलसीदास का जीवन परिचय

प्रश्न 1 (आसान). तुलसीदास का बचपन कैसा था?

उत्तर – तुलसीदास का बचपन बहुत कठिनाइयों भरा था।

प्रश्न 2 (आसान). तुलसीदास के गुरु का नाम क्या था?

उत्तर – उनके गुरु का नाम नरहरिदास था।

प्रश्न 3 (मध्यम). तुलसीदास के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में क्या मतभेद है?

उत्तर – कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान बांदा जिले का राजापुर मानते हैं, जबकि कुछ एटा जिले का सोरों मानते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). गुरु नरहरिदास की कृपा से तुलसीदास के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर – गुरु नरहरिदास की कृपा से तुलसीदास को रामभक्ति का मार्ग मिला, जिससे उनके जीवन की दिशा ही बदल गई और वे एक महान कवि बन पाए।

» तुलसीदास का साहित्यिक योगदान और काव्यगत विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). तुलसीदास जी को 'लोकमंगल की साधना के कवि' क्यों कहा जाता है?

उत्तर – क्योंकि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जन-जन का कल्याण चाहा और समाज के भले के लिए अपनी कलम चलाई।

प्रश्न 6 (आसान). तुलसीदास की सबसे प्रसिद्ध रचना कौन सी है और वह किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर – उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'रामचरितमानस' है, जो मुख्यतः अवधी भाषा में लिखी गई है।

प्रश्न 7 (मध्यम). तुलसीदास की किन्हीं तीन प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए और उनकी काव्यगत विशेषताएँ (जैसे भाषा या छंद) भी संक्षेप में समझाइए।

उत्तर – रामचरितमानस: अवधी भाषा में दोहा और चौपाई छंदों का प्रयोग।

कवितावली: ब्रज भाषा में कवित्त और सवैया छंदों का प्रयोग।

विनयपत्रिका: ब्रज भाषा में पदों की शैली में आत्म-निवेदन के पद।

प्रश्न 8 (कठिन). तुलसीदास के काव्य में 'विश्वबोध और आत्मबोध का समन्वय' कैसे झलकता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – विश्वबोध यानी समाज, लोकजीवन और सार्वभौमिक मूल्य। आत्मबोध यानी व्यक्तिगत भक्ति, आंतरिक चेतना और स्वयं का कल्याण। तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से समाज के लिए मर्यादाएँ स्थापित कीं (विश्वबोध), वहीं विनयपत्रिका में अपनी व्यक्तिगत भक्ति और आत्म-समर्पण को व्यक्त किया (आत्मबोध)। इस तरह, उनके काव्य में ये दोनों पक्ष एक साथ गहराई से जुड़े हुए मिलते हैं।

» तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ और उनकी शैलियाँ

प्रश्न 9 (आसान). तुलसीदास की कौन सी कृति दोहा और चौपाई छंद में रची गई है?

उत्तर – रामचरितमानस

प्रश्न 10 (आसान). विनयपत्रिका की भाषा क्या है?

उत्तर – ब्रज भाषा

प्रश्न 11 (मध्यम). तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में किन दो भाषाओं का प्रमुखता से प्रयोग किया है? एक-एक कृति का उदाहरण दें।

उत्तर – तुलसीदास जी ने अवधी (जैसे रामचरितमानस) और ब्रज भाषा (जैसे गीतावली) का प्रमुखता से प्रयोग किया है।

प्रश्न 12 (कठिन). रामचरितमानस को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य क्यों कहा जाता है? इसकी शैलीगत विशेषताओं के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर – रामचरितमानस को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह अवधी भाषा में दोहा और चौपाई छंदों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। इसमें लोक-कल्याण की भावना, विस्तृत कथावस्तु, चरित्र चित्रण और रसों का ऐसा परिपक्व चित्रण है जो किसी अन्य रचना में दुर्लभ है। इसकी भाषा में सरलता और गेयता का अनूठा मेल है, जिससे यह जन-जन तक पहुँच सकी।

» भरत-राम का प्रेम: पदों का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). भरत के अनुसार, राम उन्हें खेल में कैसे जिताते थे?

उत्तर – राम खुद हारकर भी भरत को जिता देते थे।

प्रश्न 14 (आसान). भरत के मन में किस बात की ग्लानि थी?

उत्तर – भरत को लगता था कि उनके कारण ही राम को वनवास जाना पड़ा।

प्रश्न 15 (मध्यम). भरत किन पंक्तियों में राम के प्रति अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करते हैं?

उत्तर – भरत 'महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन। दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन।।' जैसी पंक्तियों में अपना प्रेम व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). 'महीं सकल अनरथ कर मूला' - इस पंक्ति में भरत अपने बारे में क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर – इस पंक्ति में भरत स्वयं को सभी अनर्थों, यानी राम के वनगमन और माता कैकेयी के बुरे कर्मों का मूल कारण मानते हुए आत्मग्लानि व्यक्त कर रहे हैं।

» भरत-राम का प्रेम: पदों की व्याख्या (पुलकि सरीर से रघुराउ)

प्रश्न 17 (आसान). भरत सभा में क्यों खड़े होते हैं?

उत्तर – भरत राम के प्रति अपना प्रेम और अपनी पीड़ा व्यक्त करने के लिए सभा में खड़े होते हैं।

प्रश्न 18 (आसान). राम भरत से खेलते समय कैसा व्यवहार करते थे?

उत्तर – राम भरत से खेलते समय कभी गुस्सा नहीं होते थे और हमेशा भरत को जिताते थे।

प्रश्न 19 (मध्यम). 'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति में भरत स्वयं को किसका मूल क्यों मानते हैं?

उत्तर – भरत स्वयं को सभी अनर्थों (दुखों) का मूल मानते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी माता कैकेयी के कारण ही राम को वनवास हुआ, और क्योंकि वे कैकेयी के पुत्र हैं, इसलिए कहीं न कहीं वे भी इस पाप में भागीदार हैं। यह उनके गहरे पश्चाताप को दर्शाता है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'पफरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुवफता प्रसव कि संबुक काली' इस पंक्ति का क्या अर्थ है और भरत इसे किसके संदर्भ में कहते हैं?

उत्तर – इस पंक्ति का अर्थ है कि क्या कोदों (एक निम्न अनाज) की बाली में अच्छे चावल उग सकते हैं? या क्या काले घोंघे मोती पैदा कर सकते हैं? भरत यह अपनी माँ कैकेयी के संदर्भ में कहते हैं। वे कहना चाहते हैं कि जिस तरह एक निम्न चीज़ से अच्छी चीज़ की उम्मीद नहीं की जा सकती, उसी तरह एक 'मंदमति' माँ (कैकेयी) से ऐसे अच्छे पुत्र (राम जैसे भाई) की उम्मीद कैसे की जा सकती है, और वे स्वयं कैसे एक अच्छी संतान हो सकते हैं जब उनकी माँ ने ऐसा बुरा कर्म किया। यह उनके आत्मग्लानि को दर्शाता है।

» गीतावली से पदों का परिचय: माता कौशल्या की विरह वेदना

प्रश्न 21 (आसान). पहले पद में कौशल्या कौन सी चीज़ों को अपने हृदय से लगाती हैं?
उत्तर – राम के बाल धनुष ('बान धनुहियाँ') और सुंदर जूतियों ('ललित पनहियाँ') को।

प्रश्न 22 (आसान). 'चित्रालिखी सी' का क्या अर्थ है?
उत्तर – चित्र के समान स्थिर, जड़वत हो जाना।

प्रश्न 23 (मध्यम). दूसरे पद में कौशल्या राम से अयोध्या वापस आने का निवेदन क्यों करती हैं?
उत्तर – क्योंकि राम के प्यारे घोड़े भी उनके बिना दुखी और कमजोर हो रहे हैं, जैसे कमल बर्फ से कुम्हला जाते हैं। कौशल्या को उनकी चिंता है।

प्रश्न 24 (कठिन). इन पदों में माता कौशल्या के प्रेम की कौन सी विशेषताएँ उजागर होती हैं?
उत्तर – इन पदों से कौशल्या का निस्वार्थ मातृ प्रेम, पुत्र वियोग की असहनीय पीड़ा, और पुत्र की हर छोटी-बड़ी चीज़ से जुड़ाव प्रकट होता है। उनका प्रेम सिर्फ राम तक ही सीमित नहीं, बल्कि उनकी प्रिय वस्तुओं और यहाँ तक कि अश्वों तक भी फैलता है, जो उनके विशाल हृदय और वात्सल्य की गहराई को दर्शाता है।

» गीतावली के पदों की व्याख्या (जननी निरखति से सिखी सी)

प्रश्न 25 (आसान). माँ कौशल्या राम की कौन सी दो वस्तुओं को अपने हृदय से लगाती हैं?
उत्तर – राम के धनुष-बाण और उनकी जूतियों को।

प्रश्न 26 (आसान). जब माँ कौशल्या को राम के वनगमन की याद आती है, तो उनकी अवस्था कैसी हो जाती है?
उत्तर – वे 'चित्रालिखी सी' यानी चित्र में बनी मूर्ति की तरह ठगी सी खड़ी रह जाती हैं।

प्रश्न 27 (मध्यम). तुलसीदास जी ने 'लागति प्रीति सिखी सी' कहकर किस भाव को व्यक्त किया है?
उत्तर – तुलसीदास जी ने इस पंक्ति से माँ कौशल्या के असीम, गहन मातृ-प्रेम और विरह-वेदना की पराकाष्ठा को व्यक्त किया है, जैसे यह प्रेम की कोई सीखी हुई अवस्था हो।

प्रश्न 28 (कठिन). माँ कौशल्या की मनःस्थिति में कब-कब बदलाव आता है, और यह उनके किस मानसिक द्वंद्व को दिखाता है?
उत्तर – माँ कौशल्या की मनःस्थिति में तब बदलाव आता है जब वे कभी राम की चीज़ें देखकर उन्हें जगाने लगती हैं (पुरानी यादें), और फिर तुरंत उन्हें राम के वनगमन का स्मरण हो जाता है (वर्तमान की वास्तविकता)। यह उनके अवचेतन मन और वर्तमान की कटु सच्चाई के बीच के द्वंद्व को दर्शाता है, जहाँ उनका मन बार-बार राम के साथ बीते दिनों में लौट जाता है, लेकिन वास्तविकता उन्हें झकझोर देती है। यह उनके गहरे विरह और अस्थिर मानसिक अवस्था को दिखाता है।

» गीतावली के पदों की व्याख्या (राघौ! एक बार पिफरि आवौ से अंदेसो)

प्रश्न 29 (आसान). माँ कौशल्या राम से अयोध्या वापस आने की विनती क्यों करती हैं?
उत्तर – अपने प्यारे घोड़ों को एक बार देखने के लिए।

प्रश्न 30 (आसान). घोड़े किसके बिना दुखी और कमज़ोर हो रहे हैं?
उत्तर – राम के बिना।

प्रश्न 31 (मध्यम). 'मनहुँ कमल हिममारे' में कौन सा अलंकार है और यह घोड़ों की स्थिति कैसे बताता है?
उत्तर – इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार है। यह बताता है कि जैसे पाले से कमल मुरझा जाता है, वैसे ही राम के बिना घोड़े भी दिन-ब-दिन कमज़ोर और मुरझाते जा रहे हैं।

प्रश्न 32 (कठिन). माता कौशल्या को 'मो¯ह और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो' कहने के पीछे क्या भाव है? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – यह माँ कौशल्या के अथाह वात्सल्य और संवेदनशीलता को दर्शाता है। उन्हें अपने बेटे राम से बिछड़ने का दुख तो है ही, लेकिन वे अपने बेटे के प्रिय बेज़ुबान घोड़ों के दुख से भी विचलित हैं। यह दिखाता है कि एक माँ का प्रेम केवल इंसानों तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह अपने बच्चे से जुड़े हर जीव और वस्तु तक फैलता है, और वह उनके दुख को भी अपना दुख मानती है।

» काव्य सौंदर्य: भाव और शिल्प पक्ष

प्रश्न 33 (आसान). कविता में आए 'चित्रालिखी-सी' में कौन सा अलंकार है?
उत्तर – उपमा अलंकार

प्रश्न 34 (आसान). इस पद में कौन सा रस प्रधान है?
उत्तर – वात्सल्य रस

प्रश्न 35 (मध्यम). किसी पद का भाव पक्ष लिखते समय किन दो मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर – पद में व्यक्त प्रमुख भावनाएं (जैसे प्रेम, दुख, क्रोध) और कवि का मूल संदेश या उद्देश्य।

प्रश्न 36 (कठिन). किसी कविता के 'काव्य सौंदर्य' में भाषा की क्या भूमिका होती है?
उत्तर – भाषा ही वह माध्यम है जिससे कवि अपने भावों को व्यक्त करता है और शिल्प को गढ़ता है। भाषा की सरलता, प्रवाह, शब्द चयन, और अलंकारों का प्रयोग काव्य सौंदर्य को बढ़ाता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. तुलसीदास जी के बचपन और उनके गुरु के बारे में बताओ।
› सबसे पहले उनके बचपन को याद करो। बचपन में ही उनके माता-पिता उनसे अलग हो गए थे।
› उन्हें अपना जीवन चलाने के लिए भिक्षा माँगनी पड़ती थी।
› इसके बाद उनके गुरु का नाम याद करो – नरहरिदास।
› इन्हीं गुरु ने उन्हें भगवान राम की भक्ति का मार्ग दिखाया।
उत्तर – तुलसीदास जी का बचपन बहुत ही कष्ट भरा था। वे बचपन में ही अपने माता-पिता से बिछड़ गए थे और भिक्षा माँगकर गुजारा करते थे। उन्हें उनके गुरु नरहरिदास की कृपा से रामभक्ति का रास्ता मिला।

उदाहरण 2. तुलसीदास को 'समन्वय का कवि' क्यों कहा जाता है, उदाहरण सहित समझाइए।
› सबसे पहले, 'समन्वय' का अर्थ समझें – यानी विभिन्न चीजों को एक साथ लाना या जोड़ना।
› तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में कई विरोधी तत्वों का समन्वय किया, जैसे ज्ञान और भक्ति, सगुण और निर्गुण, शैव और वैष्णव संप्रदायों को एक साथ लाना।
› उन्होंने लोकजीवन के विभिन्न पक्षों को रामचरितमानस में बड़ी कुशलता से पिरोया, जिससे सभी वर्गों के लोग उनसे जुड़ पाए।
› उदाहरण के लिए, रामचरितमानस में राम को आदर्श पुत्र, भाई, पति और राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे व्यक्तिगत (आत्मबोध) और सामाजिक (विश्वबोध) दोनों स्तरों पर आदर्श स्थापित हुए।
› इससे स्पष्ट होता है कि वे भिन्न विचारधाराओं और लोकजीवन के पहलुओं को एक सूत्र में पिरोने में माहिर थे, इसलिए उन्हें समन्वय का कवि कहा जाता है।
उत्तर – तुलसीदास को 'समन्वय का कवि' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अपनी रचनाओं में ज्ञान-भक्ति, सगुण-निर्गुण, शैव-वैष्णव जैसी भिन्न विचारधाराओं और लोकजीवन के विभिन्न पक्षों को बड़ी कुशलता से एक साथ प्रस्तुत किया, जैसे रामचरितमानस में राम के आदर्श चरित्र द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों का सुंदर समन्वय।

उदाहरण 3. तुलसीदास की किन्हीं दो प्रमुख कृतियों का नाम बताइए और उनकी भाषा व मुख्य छंद पर प्रकाश डालिए।
› पहला, हम उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'रामचरितमानस' लेते हैं।
› इसकी भाषा 'अवधी' है, वही भाषा जो आज भी अयोध्या और उसके आसपास के इलाकों में बोली जाती है।
› इसमें मुख्यतः 'दोहा' और 'चौपाई' छंदों का प्रयोग किया गया है। चौपाई में चार चरण होते हैं और हर चरण में 16 मात्राएँ। दोहा में पहले और तीसरे चरण में 13, दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं।
› अब दूसरी कृति 'कवितावली' लेते हैं।
› इसकी भाषा 'ब्रज' है, जो मथुरा-वृंदावन क्षेत्र में बोली जाती है।
› इसमें 'कवित्त' और 'सवैया' जैसे छंदों का प्रयोग हुआ है, जिनमें वर्णों की संख्या गिनी जाती है, मात्राओं की नहीं।
उत्तर – तुलसीदास की दो प्रमुख कृतियाँ हैं: 1. रामचरितमानस (भाषा: अवधी, छंद: दोहा, चौपाई) और 2. कवितावली (भाषा:

ब्रज, छंद: कवित्त, सवैया)।

उदाहरण 4. भरत राम के स्वभाव की किन विशेषताओं का वर्णन करते हैं?

› पहला पद ध्यान से पढ़ें, खासकर वो पंक्तियाँ जहाँ भरत राम के व्यवहार की बात करते हैं।

› भरत कहते हैं 'मैं जानउँ निज नाथ सुभाउफ। अपराधिहु पर कोह न काउफ।।' - इसका अर्थ है कि राम कभी अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते।

› 'मो पर कृपा सनेहु बिसेखी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।।' - इसका अर्थ है कि राम भरत पर विशेष कृपा और स्नेह रखते थे, खेलते समय भी कभी गुस्सा नहीं करते थे और कभी उनका मन नहीं तोड़ते थे।

› 'हारेंहूँ खेल जिताव ̄ह मोंही।।' - इसका अर्थ है कि राम हारकर भी भरत को ही जिता देते थे।

› इन सभी बातों से राम के विनम्र, स्नेही, दयालु और प्रेमपूर्ण स्वभाव की विशेषताएँ उभरकर आती हैं।

उत्तर – भरत के अनुसार, राम बहुत ही दयालु, स्नेही और सरल स्वभाव के थे। वे कभी किसी पर क्रोध नहीं करते थे, खासकर भरत पर तो उनकी विशेष कृपा थी। वे खेल में भी भरत को हमेशा जिता देते थे और कभी उनका मन नहीं तोड़ते थे।

उदाहरण 5. भरत सभा में खड़े होकर राम के स्वभाव की किन विशेषताओं का वर्णन करते हैं?

› पहला पद ध्यान से पढ़ें: 'मैं जानउँ निज नाथ सुभाउफ। मो पर कृपा सनेहु बिसेखी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू। हारेंहूँ खेल जिताव ̄ह मोंही।।'

› पहली पंक्ति 'मैं जानउँ निज नाथ सुभाउफ' बताती है कि भरत राम के स्वभाव को अच्छी तरह जानते हैं।

› दूसरी पंक्ति 'मो पर कृपा सनेहु बिसेखी' दर्शाती है कि राम भरत पर विशेष कृपा और स्नेह रखते थे।

› तीसरी पंक्ति 'खेलत खुनिस न कबहूँ देखी' बताती है कि राम खेलते समय कभी गुस्सा नहीं होते थे, यहां तक कि हारने पर भी।

› चौथी पंक्ति 'कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू' कहती है कि राम ने कभी भरत का मन नहीं तोड़ा।

› अंतिम पंक्ति 'हारेंहूँ खेल जिताव ̄ह मोंही' इस बात पर ज़ोर देती है कि राम हमेशा भरत को, चाहे वे हार रहे हों, जिताते थे।

› इन पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि राम अत्यंत कृपालु, स्नेही, शांत स्वभाव के, और निस्वार्थ प्रेम करने वाले थे।

उत्तर – भरत के अनुसार, राम बहुत कृपालु, स्नेही और शांत स्वभाव के थे। वे कभी किसी पर क्रोध नहीं करते थे, विशेषकर भरत पर। खेलते समय भी वे भरत का मन रखते थे और हारने पर भी उन्हें जिताते थे।

उदाहरण 6. माता कौशल्या राम की किन वस्तुओं को देखकर उन्हें याद कर रही हैं और उनकी मनःस्थिति कैसी है?

› पहला पद ध्यान से पढ़ें, जहाँ कौशल्या राम की वस्तुओं का वर्णन करती हैं।

› पद में 'बान धनुहियाँ' (बाल धनुष), 'ललित पनहियाँ' (सुंदर जूते) जैसे शब्द ढूंढें।

› देखें कि वे इन चीज़ों को 'बार बार उर नैननि लावति' (बार-बार हृदय से लगाती हैं और आँखों में आँसू लिए देखती हैं) – इससे उनकी विरह वेदना स्पष्ट होती है।

› फिर देखें 'कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति' (कभी पहले की तरह जगाने जाती हैं), 'बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ' (बहुत देर हो गई, राजा के पास जाओ) – ये सब उनके भ्रम और दुख को दिखाते हैं।

› अंतिम पंक्ति 'रहि चकि चित्रालिखी सी' बताती है कि वो इतनी दुखी हैं कि जैसे कोई तस्वीर हो, पत्थर की मूरत बन गई हैं।

उत्तर – माता कौशल्या राम के 'बान धनुहियाँ' (छोटे धनुष) और 'ललित पनहियाँ' (सुंदर जूतियों) को देखकर उन्हें याद करती हैं। उनकी मनःस्थिति अत्यंत विरह-विगलित, व्याकुल और भ्रमित है। वे कभी उन्हें जगाने जाती हैं, कभी राजा के पास भेजने का अभिनय करती हैं, और अंततः एक चित्र की भाँति स्थिर रह जाती हैं, जो उनके गहरे सदमे और दुख को दर्शाता है।

उदाहरण 7. कौशल्या माँ राम के किन-किन वस्तुओं को देखकर भावुक हो उठती हैं और ऐसा करते हुए उनकी मनःस्थिति कैसी हो जाती है, वर्णन करें।

› सबसे पहले, पद की पहली पंक्ति 'जननी निरखति बान धनुहियाँ' को समझो। माँ राम के धनुष-बाण को देखती हैं।

› फिर अगली पंक्ति 'बार बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ' बताती है कि वो राम की सुंदर जूतियों को बार-बार अपने हृदय और आँखों से लगाती हैं।

› आगे, 'कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति' में वो भूल जाती हैं कि राम वन में हैं, और उन्हें वैसे ही जगाने जाती हैं जैसे पहले जगाया करती थीं। वो कहती हैं, 'उठो तात! बलि मातु बदन पर, अनुज सखा सब द्वारे' – हे पुत्र, उठो, तुम्हारे भाई-बंधु और मित्र सब दरवाज़े पर इंतज़ार कर रहे हैं।

› कभी-कभी उन्हें याद आता है कि राम वन चले गए हैं, और वो 'रहि चकि चित्रालिखी सी' – यानी चित्र में बनी हुई मूर्ति की तरह ठगी सी खड़ी रह जाती हैं।

› तुलसीदास जी कहते हैं कि वो समय ऐसा लगता है 'लागति प्रीति सिखी सी' – जैसे किसी ने प्रेम की शिक्षा सीखी हो, यानी माँ का प्रेम उस समय पराकाष्ठा पर होता है।

उत्तर – माँ कौशल्या राम के धनुष-बाण और उनकी सुंदर जूतियों को देखकर भावुक हो उठती हैं। वे उन्हें बार-बार अपने हृदय और आँखों से लगाती हैं। कभी वे भ्रमवश राम को जगाने जाती हैं जैसे वे पहले उन्हें जगाती थीं, और कहती हैं कि उनके भाई-बंधु और मित्र बाहर इंतज़ार कर रहे हैं। परंतु जैसे ही उन्हें राम के वनगमन का स्मरण होता है, वे एक चित्र में बनी मूर्ति की तरह ठगी-सी खड़ी रह जाती हैं। यह स्थिति उनके असीम मातृ-प्रेम और विरह वेदना को दर्शाती है।

उदाहरण 8. गीतावली के पद 'राघौ! एक बार पिफरि आवौ' में माता कौशल्या की करुणा और घोड़ों के प्रति उनकी चिंता को स्पष्ट कीजिए।

› सबसे पहले पद की पहली पंक्ति से माँ कौशल्या के मुख्य निवेदन को समझें: 'राघौ! एक बार पिफरि आवौ' - माँ राम से एक बार अयोध्या लौटने का आग्रह करती हैं।

› फिर यह देखें कि वे क्यों बुला रही हैं: 'ए बर बाजि बिलोकि आपने' - अपने प्यारे घोड़ों को देखने के लिए।

› घोड़ों की पहले की स्थिति को याद करें: 'तेइ पय पोखि कर-पंकज वारि वारि चुचुकारे' - राम उन्हें अपने हाथों से प्यार करते थे।

› वर्तमान स्थिति में घोड़ों का दुख व्यक्त करें: 'क्यों जीव ̄ह, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे' - राम की याद में वे कमज़ोर हो रहे हैं।

› भरत की देखभाल के बावजूद घोड़ों की दयनीय दशा बताएं: 'भरत सौगुनी सार करत हंै... तदपि दिन ̄ह दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे' - भरत द्वारा देखभाल के बावजूद वे सूखते जा रहे हैं, जैसे पाले से कमल।

› अंत में माँ की सबसे बड़ी चिंता दर्शाएं: 'तुलसी मो ̄ह और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो' - माँ को राम और भरत से भी ज़्यादा घोड़ों की चिंता है।

› निष्कर्ष निकालें कि यह पद माँ के वात्सल्य और जीवों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है।

उत्तर – इस पद में माता कौशल्या अपने पुत्र राम से एक बार अयोध्या लौटकर अपने प्यारे घोड़ों को देखने का अनुरोध करती हैं। वे बताती हैं कि राम के बिना ये घोड़े अत्यंत दुखी और कमज़ोर हो गए हैं, मानो पाले से मारे गए कमल हों। भरत के अत्यधिक ध्यान देने पर भी उनकी दशा सुधर नहीं रही। माँ को राम और अन्य सभी की चिंता से ज़्यादा, इन बेज़ुबान घोड़ों की दशा की चिंता है, जो उनके गहन वात्सल्य और जीव प्रेम को दर्शाता है।

उदाहरण 9. तुलसीदास के पद 'पठित पद के आधार पर सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास का भाषा पर पूरा अधिकार था?' में काव्य सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

› पहले भाव पक्ष देखें: तुलसीदास जी ने माँ कौशल्या के वात्सल्य और राम के प्रति उनके प्रेम को कितनी गहराई से दर्शाया है। घोड़े तक के प्रति उनकी चिंता, यह सब उनके हृदय की विशालता दिखाता है। यह मार्मिकता और करुणा इसका भाव पक्ष है।

› अब शिल्प पक्ष देखें: तुलसीदास जी ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें ग्रामीण शब्दों और संस्कृतनिष्ठ शब्दों का सुंदर मेल है। उन्होंने 'चित्रालिखी-सी' में उपमा अलंकार का प्रयोग किया है, और 'मुरझाए झाँवरे' जैसे शब्द चयन से बिम्ब विधान किया है। छंद और लय भी ऐसी है कि पढ़ते ही पाठक भावनाओं में बह जाता है।

› निष्कर्ष: इन दोनों पक्षों के गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी ने न केवल गहरी भावनाओं को छुआ,

बल्कि उन्हें व्यक्त करने के लिए भाषा, अलंकार और छंदों पर भी उनका अद्भुत नियंत्रण था, जिससे उनकी रचनाएँ कालजयी बन गईं।

उत्तर – तुलसीदास जी का भाषा पर पूरा अधिकार था, जिसे उन्होंने भावों की सटीक अभिव्यक्ति और प्रभावशाली शिल्प-विधान से सिद्ध किया है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• तुलसीदास जी का जीवन परिचय, विशेषकर उनके बचपन के कष्ट, गुरु का नाम और 'रामचरितमानस' का आरंभ स्थान, बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान से पढ़ना बच्चों।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें भरत की मनोदशा, राम का स्वभाव और कैकेयी के प्रति उनके विचारों से जुड़े प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। पदों की व्याख्या और भावार्थ अच्छे से तैयार करें।

• बोर्ड परीक्षा में इन पदों से 'भाव सौंदर्य' और 'शिल्प सौंदर्य' पर आधारित प्रश्न आते हैं। माँ की भावनाओं और कवि की भाषा शैली पर ध्यान देना।

• बोर्ड परीक्षा में, इस पद से माँ कौशल्या के वात्सल्य और जीव प्रेम पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। 'मनहुँ कमल हिममारे' जैसे अलंकारों की पहचान और व्याख्या करना भी महत्वपूर्ण है।

• बोर्ड परीक्षा में काव्य सौंदर्य लिखते समय, पहले भाव पक्ष को स्पष्ट करें, फिर शिल्प पक्ष के बिंदुओं (भाषा, अलंकार, छंद) को उदाहरण सहित लिखें। यह प्रश्न अक्सर 4-5 अंकों का आता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› तुलसीदास: बचपन कष्ट भरा, गुरु नरहरिदास, रामचरितमानस, निधन काशी।
› भरत का आत्मग्लानि, राम का सहज-स्नेही स्वभाव, अनन्य भ्रातृप्रेम।
› कौशल्या की विरह वेदना: राम की वस्तुएँ, अश्वों का दुख, मातृ प्रेम।
› माँ कौशल्या की राम से वापसी विनती, घोड़ों की चिंता, करुणा का भाव।
› काव्य सौंदर्य = भाव पक्ष (भावनाएं, रस) + शिल्प पक्ष (भाषा, अलंकार, छंद)।